① Rawls

समकालीन उदारवादी चिन्तन के अन्तर्गत जॉन रॉल्स ने समतावाद का व्यापक समर्थन किया। जॉन रॉल्स की पहली रचना 'The Cernel of philosophy' में प्रकाशित हुई जिसका नाम Justice as fairness था। 'Theory of Justice' (1971) उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है।

समकालीन राजनीतिक विज्ञान में उदारवाद को प्रमुखता मिली है। उदारवाद व्यक्तियों के विस्तृत संबंधों के समर्थक सामाजिक व्यवहारों और राजनीतिक दृष्टिकोण का व्यापक समुच्चय है। इसके व्यक्तिगत विभेदों के प्रति सहिष्णुता का विस्तारीकरण है। व्यक्तिगत विभेद को उचित ठहराया जाता है। उदारवाद की दार्शनिक जड़ें सहिष्णुता और सरकार सम्बन्धी लॉक के विचारों, सम्पत्ति सम्बन्धी एडम स्मिथ के विचारों, अमेरिकी स्वतन्त्रता की उद्घोषणा, वैध अधिकारों की उद्घोषणा, तथा बेन्थम, मिल की कृतियों में ढूंढी जा सकती हैं। उदारवाद के प्रमुख तत्व हैं - व्यक्तिवाद, स्वतन्त्रता, विवेक, समानता, सहिष्णुता, सहमति, संविधानवाद इत्यादि।

समकालीन उदारवाद के अग्रणी समर्थकों में जॉन रॉल्स का नाम लिया जाता है जो उदारवादी लोकतन्त्र, बाजार अर्थव्यवस्था एवं वितरणात्मक न्याय के सामाजिक राजनीतिक विश्लेषण के समर्थक हैं। इस विश्लेषण के पक्ष में एक एकीकृत, व्यवस्थित एवं औचित्यपूर्ण समाधान प्रस्तुत करता है। रॉल्स का लक्ष्य अनोखा और महत्वाकांक्षी है। नैतिक व्यक्ति सम्पन्न व्यक्तियों से शासित समाज में पूर्ण सौहार्द स्थापित हो यही इनका लक्ष्य है। रॉल्स की परियोजना सामाजिक न्याय

की धारणा को परिभाषित करने एवं उनका बचाव करने का है। स्वतन्त्रता एवं समानता परस्पर विरोधी मूल्य हैं। किन्तु, उदारवादी और समाजवादी सिद्धान्त के एकीकरण द्वारा, उन्हें शब्दों द्वारा क्रमबद्ध किया जा सकता है। Rawls का उदारवाद लाभ की दृष्टि से हीन लोगों के लिए है। सो उदारवाद और समाजवादी आलोचनाओं को अर्थ देता है। इसी कारण विवेचना के क्रम में यह प्रश्न उठता है कि Rawls समाजवादी उदारवादी था लोकतन्त्रवादी, क्या है? उदारवाद को लोकतान्त्रिक समाजों में विद्यमान असमानताओं को मर्यादित करने का उनका प्रयास अनोखा है।

Rawls की रचनाओं से आदर्शवादी राजनीतिक सिद्धान्त के पूर्ण उदय की घोषणा हुई। राजनीतिक सिद्धान्त की विकास यात्रा में उनकी रचनाएँ मील का पत्थर सिद्ध हुई। Rawls ने स्थापित किया कि न्याय सामाजिक व्यवस्थाओं का प्राथमिक अपरिहार्य गुण है जिसकी प्राप्ति सामाजिक सहयोग ~~के~~ के द्वारा लोगों के उचित विकास से हो सकती है। सामाजिक दायित्व की समस्या के समाधान के लिए Rawls एक प्रकार की सामाजिक संविदा का सिद्धान्त प्रस्तुत करते हैं।

समकालीन उदारवाद में वितरण और समानता बहस के केन्द्र में हैं, परन्तु समानता का पात्र व्यक्ति समूह या वर्ग किसे माना जाए तथा वितरण व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर किया जाए या मुक्त बाजार विनिमय के आधार ~~पर~~ अनुसार व्यक्तिवादी इच्छा स्वतन्त्रतावादी कल्याणकारी राज्य के समर्थकों सामाजिक न्याय के समर्थकों, समुदायवादियों, नारीवादियों एवं नवमार्क्सवादियों के इस सम्बंध में परस्पर विरोधी मतादर्श हैं। ऐसी सामाजिक वस्तुएँ जिनकी आपूर्ति माँग की तुलना में कम है ~~उनके आवंटन~~ उनके आवंटन के लिए लेकिन Rawls का सिद्धान्त समन्वयकारी तथा मध्यमार्गी है

रॉल्स मूल अधिकारों और स्वतन्त्रताओं का वितरण वैयक्तिक समानता के आधार पर करते है। अन्य प्राथमिक सामाजिक वस्तुओं जैसे शक्ति और अवसर तथा आय और सम्पत्ति की तुलना में मौलिक अधिकारों और स्वतन्त्रताओं को भी Rawls अधिक महत्व या वरियता प्रदान करते हैं। Rawls के अनुसार इनमें अन्तरात्मा की स्वतन्त्रता, चिन्तन की स्वतन्त्रता, वैयक्तिक स्वतन्त्रता, व्यक्तिगत सम्पत्ति को धारण करने की स्वतन्त्रता, मनमाने गिरफ्तारी या गिरफ्तार किये जाने से स्वतन्त्रता अर्थात विधि के शासन के स्वतन्त्रता, संवैधानिक पदों के लिए मतदान किए जाने की स्वतन्त्रता तथा इत्यादि शामिल है। इन्हीं अधिकारों एवं स्वतन्त्रताओं के कारण व्यक्ति उच्च श्रेणी के दो नैतिक श्रेणियों एवं शक्तियों का प्रयोग और साकारीकरण के लिए समर्थ बन पाते हैं —

1) न्याय के सिद्धान्तों को समझने, लागू करने तथा उनके अनुसार कार्य करने का सामर्थ्य

2) अच्छाई के धारणाओं के निर्माण, संशोधन और उनके लिए प्रयत्न करने का सामर्थ्य। अर्थात तर्क चिन्तन एवं निर्णय की शक्ति। यही नैतिक सामर्थ्य उचित समाज के नागरिकों को स्वतन्त्र एवं समान बनाती है।

किन्तु आय एवं सम्पत्ति में कुछ असमानताओं को वे अपरिहार्य और शायद अवांछनीय भी नहीं मानते हैं। वे इन असमानताओं को वे अपने न्याय के दूसरे सिद्धान्त द्वारा बचाना चाहते हैं। उनके सिद्धान्त को अधिक कैसे असमानता और आय और सम्पत्ति की ज्यादा समानता आर्थिक रचनात्मकता

और उत्पादकता के लिए आवश्यक आर्थिक उत्साह
को नष्ट कर ~~देती~~ देगी। अल्प लाभान्वितों के बीच
लाभों का वितरण के लिए रचनात्मकता और उत्पादकता
का एकीकरण सामाजिक संरचना या संस्थात्मक
ढाँचा में होना श्रेयस्कर है। समाज की मूल संस्थाएँ
इस प्रकार सु- संरचित हो, जिससे आय और सम्पत्ति
की असमानताएँ रखते हो तथा कम लाभान्वित को अधिक
सर्वाधिक लाभ पहुंचे।

Rawls का
और सम्पत्ति की असमानता का विरोध सिद्धान्त आय
लिए नहीं, बल्कि उनको समानता और बदलने के
उचित में बदलना है। अनुचित माना, ~~[illegible]~~ को

सामाजिक, आर्थिक असमानताएँ Rawls मानती
स्वीकार है, जब वे राजनीतिक स्वतंत्रताओं पर आघात
नहीं करती हो। उनके लिए दो शर्तों को संतुलित आदर-
- पद और ~~स्थिति~~ स्थिति उचित समानता के आधार पर
सब के लिए खुली हो —

सामाजिक, आर्थिक असमानताएँ सबसे कम लाभा-
न्वित हो, उसे सर्वाधिक लाभ पहुँचे।
राज्य शैक्षणिक अवसर की उचित समानता के अनुसार
सुनिश्चित करे साथ ही आर्थिक क्षेत्रों में उचित समानता
लाभ प्रदान करे। बेरोजगारी और बिमारी का

Rawls के अनुसार समानता एक परि-
चालनात्मक अवधारणा है। पूर्ण स्वतंत्रता असंभव है
और असमानता समाज का अपरिहार्य गुण है। Rawls
के प्रयत्न पश्चात समृद्ध समाजों के अन्दर नैतिकता
स्वीकार्य असमानताओं को उचित ठहराना है। कम लाभान्वितों
का के जीवन संभावनाओं का क्रियात्मक उन्नयन है। Rawls

तर्क है कि व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाकर ही राज समानता प्राप्त की जा सकती है।

Rawls ने लगातार अपने विचारों को परिवर्तित तथा स्पष्ट किया उन्होंने राजनीतिक सिद्धान्त के इस दायित्व को रेखांकित किया की समकालीन संवैधानिक लोकतंत्रों के 'उचित' के रूप में न्याय के मूल अन्तःप्रेरित विचारों को न्याय की राजनीतिक धारणा के साथ सम्मिलित किया जाए। विगत दो शदियों के लोकतान्त्रिक चिन्तन की परम्परा में इस पर सहमति नहीं बन पाई की संवैधानिक लोकतन्त्र की मूल संस्थाएँ नागरिकों के मूल अधिकारों और स्वतन्त्रताओं को स्पष्ट और सुरक्षित कर सके। राजनीतिक सिद्धान्त का कार्य इन्हीं मौलिक प्रश्नों पर विभाजनकारी राजनीतिक विवाद के बीच राजनीतिक सहमति का साझा आधार ढूंढना है। Rawls की अपेक्षा है कि संवैधानिक लोकतान्त्रिक समाजों में विद्यमान सभी विरोधी दार्शनिक और धार्मिक मतादर्शों की सहमति उनके राजनीतिक उदारवाद को प्राप्त होगा क्योंकि यह यदि सर्वस्वीकार समाधान नहीं भी देता है तो सहमति का अतिव्यापी आधार प्रदान करता है। यह वैचारिक भिन्नता को कम करने का प्रयास करता है।

Rawls के अनुसार समाज का अर्थ है, स्वतन्त्र एवं समान व्यक्तियों के बीच सामाजिक सहयोग की उचित व्यवस्था। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि सहयोग की शर्तें उचित हो तथा सभी प्रतिभागियों को विवेकसम्मत लाभ या अच्छाई प्राप्त हो। आज भी न सम्पत्ति और सामाजिक नीतियों को ले कर बनाना कल्याणकारी राज्य सम्बन्धी बहस का मूल मुद्दा नहीं प्रश्न नहीं है। Rawls की दृष्टि में अच्छाई की परस्पर विरोधी और बेमेल धारणा अवश्यम्भावी है।

Rawls का समकालीन उदारवादी सिद्धान्त का प्रारूप उनके द्वारा प्रतिपादित काल्पनिक सामाजिक संविदा पर टिका है जिसमें 'मूल स्थिति' एवं 'अज्ञान का पर्दा' दो महत्वपूर्ण अवधारणाएँ समाविष्ट हैं। Rawls ने वस्तुतः अधिकारों और स्वतन्त्रताओं सम्बन्धी उदारवादी सिद्धान्तों की संगति सामाजिक समानता के समतामूलक समानताओं के साथ बैठाने का प्रयत्न किया।

सामाजिक विवेक – राजनीतिक जीवन के लिए सामाजिक विवेक की धारणा महत्वपूर्ण है। धर्म और राजनीति के पृथक्करण को बौद्धिक औचित्य यही प्रदान करता है। धार्मिक हितों के सन्दर्भ से पृथक, राजनीतिक कार्यों का सम्पादन लौकिकीकरण है और इसमें धार्मिक आस्था का नीजिकरण होता है। Rawls धार्मिक परम्पराओं के प्रति तटस्थ मत अपनाते हैं। 1999 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'The law of peoples' में Rawls सार्वजनिक विवेक में सत्य या सही के व्यापक मतादर्शों के स्थान पर राजनीतिक दृष्टि से तर्कसंगत विचार का समर्थन करते हैं जो नागरिकों को मात्र नागरिक मानें। Rawls का मत है कि उनका वितरणात्मक सिद्धान्त मनुष्य के संकीर्ण एवं स्वार्थी मनोवृत्ति को ~~समाप्त~~ हटा देगा।

रॉल्स के सिद्धान्त की अनेक आलोचकों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से आलोचना की है –

– समतिवादियों ने अनुसार रॉल्स का सिद्धान्त उदारवादी पूँजीवादी व्यवस्था के औचित्य की पुष्टि करता है जिससे धनवान वर्ग के विशेषाधिकार को कायम रखने में सहायता मिलती है। ~~यह विचार यह सिद्धान्त~~ समानता के नाम पर भारी आर्थिक-सामाजिक विषमताओं को बढ़ावा देता है।

– मार्क्सवादियों ने 'अज्ञान के पर्दे' एवं 'मूल स्थिति' की आलोचना करते हुए कहा है कि आर्थिक-सामाजिक तथ्यों की जानकारी के बिना न्याय सिद्धान्त का निर्धारण सम्भव नहीं।

– ~~स्वच्छातन्त्रवादियों ने आलोचना करते हुए कहा है कि रॉल्स~~

समानता पर अत्यधिक बल ...

- स्वेच्छातन्त्रवादियों ने रॉल्स की आलोचना करते हुए लिखा है कि समानता पर अत्यधिक बल देने के कारण रॉल्स ने मनुष्य की स्वतन्त्रता का बलिदान कर दिया है।
- समुदायवादियों ने माना है कि रॉल्स का राजनीतिक दर्शन उत्तम जीवन की किसी भी संकल्पना को दूसरों से श्रेष्ठ या हीन मानने का दावा नहीं करता। ऐसी नैतिक तटस्थता की नीति को अपनाकर मनुष्य 'सामान्य शुभ' को समर्पित जीवन प्रणाली खो देता है।

इन आलोचनाओं के बावजूद रॉल्स के न्याय सिद्धान्त को व्यर्थ नहीं मान सकते। आज वर्तमान युग में समता एवं न्याय समकालीन लोकतान्त्रिक समाज की बड़ी समस्या है। वितरणात्मक न्याय का प्रश्न ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है। सामाजिक न्याय की समस्या का उपयुक्त हल रॉल्स की उदारवादी ढाँचे में ही सम्भव है। द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर काल के लेखकों में Rawls का योगदान राजनीति सिद्धान्त में प्रेरणादायक रहा है। दार्शनिक दृष्टिकोण का भी राजनीतिक सिद्धान्त में पुनरुत्थान हुई है।